परमाणु अस्त्रों के संबंध में 'वैश्विक लक्ष्मण रेखा' का क्या होगा

रमेश जौरा द्वारा

बर्लिन (आईडीएन) - परमाणु अस्त्र मुक्त दुनिया के कट्टर प्रचारक के रूप में प्रसिद्ध **(आईसीएएन** (ICAN) ने एक बार फिर से दुनिया के कुछ चुनिंदा राष्ट्रों से अपील की है कि वे अपनी ताकत और रुतबे के प्रयोग से पृथ्वी और संपूर्ण मानवजाति के अस्तित्व के लिए खतरा बन गए सभी परमाणु अस्त्रों पर रोक लगाएं। परमाणु अस्त्रों को समाप्त करने संबंधी अंतरराष्ट्रीय अभियान द्वारा ऐसे समय पर ज़ोरदार अपील की गई जब न्यूयॉर्क में परमाणु निरस्त्रीकरण पर यूएन की उच्च-स्तरीय बैठक चल रही थी।

26 सितंबर को दिए गए एक बयान में 80 देशों में 300 से अधिक संगठनों के विश्वव्यापी गठबंधन अभियान, आईसीएएन ने पूछा: "परमाणु अस्त्रों के संबंध में 'वैश्विक लक्ष्मण रेखा' कहाँ है?"

वह प्रश्न अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के उस संदर्भ की ओर इशारा करता है जो उन्होंने रासायनिक हथियारों के कथित प्रयोग के चलते सीरिया द्वारा 'लक्ष्मण रेखा' लांघने के समय दिया था, और जिसके फलस्वरूप सैन्य कार्रवाई की धमकी दे डाली, जिसे समय रहते रूस ने टाला और राष्ट्रपति बशर हफेज़ अल-असद को हर संभव मदद करने के लिए राजी किया।

"सीरिया में हमले की भयावहता ने सामूहिक विनाश के हथियारों के कब्जे से होने वाले खतरे को सामने ला दिया है। रासायनिक हथियारों के प्रयोग से हुए नरसंहार पर दुनिया का आक्रोश सिद्ध करता है कि जब तक उन्हें खत्म नहीं किया जाता, उनके प्रयोग का एक बड़ा खतरा बना रहेगा, फिर चाहे उनका प्रयोग जानबूझकर या किसी दुर्घटनावश किया जाए। परमाणु हथियार, अपनी प्रतिष्ठा और प्रतीक के बावजूद इस बुनियादी हकीकत से अछूते नहीं हैं, और इनकी अनदेखी का परिणाम बहुत भयंकर होगा," आईसीएएन ने चेतावनी दी है।

लिव टोरेस, महासचिव, नॉर्वेजियन पीपल्स एड, जिन्होंने उस बयान को हफिंगटन पोस्ट पर प्रकाशित किया, उनके अलावा आठ 'पुष्टिकृत हस्ताक्षरकर्ता' इस प्रकार हैं: मैडलिन रीस, महासचिव, वुमेंस इंटरनेशनल लीग फॉर पीस एंड फ्रीडम (डब्ल्यूआईएलपीएफ); फिलिप जेनिंग्स, महासचिव, यूएनआई ग्लोबल यूनियन; जान ग्रुइटर्स, कार्यकारी निदेशक, आईकेवी पैक्स क्रिस्टी; केट हडसन, महासचिव, कैम्पेन फॉर न्यूक्लियर डिसआर्मामेंट (सीएनडी); अकीरा कावासाकी, कार्यकारी समिति सदस्य, पीस बोट; माइकल क्राइस्ट, कार्यकारी निदेशक, इंटरनेशनल फिजिशियंस फॉर द प्रिवेंशन ऑफ न्यूक्लियर वॉर (आईपीपीएनडब्ल्यू); और हिरोत्सुगो तेरासाकी, कार्यकारी निदेशक, सोका गकाई इंटरनेशनल (एसजीआई)।

एसजीआई - दुनिया भर में 1 करोड़ 20 लाख से अधिक लोगों वाला एक जन साधारण बौद्ध आंदोलन - आस्था-आधारित संगठनों के बीच एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह संगठन परमाणु अस्त्रों के उन्मूलन के लिए लगातार तब से प्रचार कर रहा है जब से दूसरे सोका गकई राष्ट्रपति जोसेई टोडा ने सितंबर 8, 1957 को परमाणु अस्त्रों के उन्मूलन के लिए घोषणा का आह्वान किया था। 2007 में, एसजीआई ने सभी प्रकार के परमाणु शस्त्रागार पर प्रतिबंध के पक्ष में जनता की राय को बुलंद करने के लिए पीपल्स डेकेड फॉर न्यूक्लियर अबोलिशन अभियान का शुभारंभ किया।

हफिंगटन पोस्ट में आईसीएएन ने अपने बयान जोर दिया है: "परमाणु निरस्त्रीकरण केवल परमाणु हथियार रखने वालों का कर्तव्य नहीं है। परमाणु हथियार दुनियाभर में मानवजाति के लिए खतरा हैं, और उन्हें खत्म करने का दायित्व परमाणु हथियार वाले देशों के साथ-साथ परमाणु मुक्त देशों का भी है।"

हस्ताक्षरकर्ताओं का यह तर्क है कि परमाणु अस्त्र किसी में फर्क नहीं करते हैं, और उनके प्रभाव को सीमित या नियंत्रित नहीं किया जा सकता है। वास्तव में, केवल 17000 हथियारों का प्रयोग भी, जो मौजूदा शस्त्रागार का छोटा सा अंश है, जलवायु बाधित कर देगा और कृषि उत्पादन के लिए खतरा पैदा कर देगा, जिसके चलते दो अरब से अधिक लोगों को भुखमरी का सामान करना पड़ेगा।

उन देशों के लिए जो स्थिति की सच्चाई को जानते हुए भी अनजान बन रहे हैं, बयान में कहा गया है: "बेशक, परमाणु अस्त्र वाले देश इनके असली प्रभाव और अन्य पारंपरिक हथियारों की तुलना में इन्हें लेकर अपनाई गई दोहरी नीति से अनजान नहीं हैं।"

बयान में यह भी कहा गया है: "सच्चाई यह है कि, दशकों से, परमाणु अस्त्रों को पौराणिक दर्जा दिया गया है: उन्हें 'शांति कायम रखने वाले' या 'अपरिहार्य बुराई' के रूप में देखा जाता है। परमाणु अस्त्र धारक देशों के राजनितिक और सैन्य समाज के लिए उनके स्वरूप को ताकत और शान के प्रतीक के रूप में बदल दिया गया है।" [IDN-InDepthNews – 27 सितंबर, 2013]